रात्री क्लास   ओम् शान्ति   5-10-67

बच्चों को यह तो खातरी है, बाप के पास आते हैं। शिक्षक के पास भी, और गुरु के पास भी आये हैं। सत बाप सत टीचर, सत गुरु तीनों एक ही है। किसका है सब आत्माओं का। क्योंकि हो सब जीवात्मायें। परन्तु जीव का बाप प्रजापिता ब्रह्मा है। आत्माओं का बाप तो शिव बाबा ही है। बाप टीचर सतगुरु एक को ही कहा जाता है। पहले तो बाप, टीचर गुरु सब अलग2 थे। मनुष्य को कब सदगुरु नहीं कह सकते। मनुष्य झूठ बिगर रह न सके। सच्ची दुनिया कहा जाता है सतयुग को। पुरानी कलयुगी दुनिया को झूठ खण्ड कहा जाता। बाप सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। रावण आकर झूठ खण्ड बनाती है। यह खेल है दुनिया में यह कोई नहीं जानते। एक सदगुरु को न जानने के कारण अनेक गुरु कर देते हैं। सर्व की सदगति करने वाला एक ही है। सतयुग त्रेता में गुरु नहीं करना होता। वहां दुर्गति में कोई नहीं होता है। बच्चे अनेक गुरु करते हैं, कोई किसको कोई किसको। ऊंच ते ऊंच है परमपिता परमात्मा। सिक्ख लोग कहते है सत श्री अकाल। वह एक ही सदगुरु है। बाकि सब झूठी दुनिया में झूठे गुरु हैं। झूठ खण्ड है ना। सतयुग में सच्च ही सच्च होता है। यहां तुम जानते हो आत्माओं और परमात्मा का मेला है। यह मेला चलता आता है। जब से बाप आते हैं मेला चलता ही आता है। ये मेला पुरा होगा सतयुग में फिर कोई मेला लगेगा नहीं। यहां कितने अनेक मेले लगते हैं। मेलों में जाते2 आत्मा मैली हो गई है। फिर बाप मैल निकाल स्वच्छ बनाते हैं। तुम यहां स्वर्ग की परियां बनने आये हो। परी भी आत्मा ही बनती है। फिर शरीर भी ऐसा शोभनिक हो जाता है। आत्मा प्यूर नहीं बनती तो शरीर भी काला मिलता है। तुम बच्चे अभी बेसमझ से समझदार बने हो। आगे कुछ भी समझ नहीं थी। बिलकुल बुद्धु थे। अब बुद्धिवान बने हो। बुद्धिवानों का बुद्धि बाप है। कहते हैं ना हे भगवान इसको अच्छी बुद्धि दो। इनकी (ल० ना०) अच्छी बुद्धि है ना। इनको स्वर्ग का मालिक किसने बनाया। दुनिया में कोई नहीं जानते। तुम अभी जानते हो। गीता में है राजयोग। वह है झूठ खण्ड में झूठ खण्ड। अब बाप सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। राजयोग बैठ सिखलाते हैं। दूसरा कोई डबल सिरताज बनाये नहीं सकते। बाप ही डबल सिरताज बनाते हैं। फिर वहां कब अकाले मृत्यु भी नहीं होगा। तो ऐसी पढ़ाई कितना ध्यान देना चाहिए। ऐसे बाप बाप को भूलना न चाहिए। सन्यासि भी कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में इक्ठे रहते पवित्र रह न सकेंगे। फिर तुमको समझाना है बाप गिरती देते हैं। एक जन्म पवित्र बनने से तुम 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनेंगे। ...ल मार्ग में माथा टेकते रहो, पैसे फेंकते रहो। यहां बाप कहते हैं मैं दाता हूं। अरदास आद कुछ नहीं है। बाकि हां बाप को याद करते रहो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा न समझने से बाप याद न आवेगा। फिर घर-बार धंधा आद याद पड़ेगा। याद की यात्रा से बड़ी आयु होगी। विकर्म विनाश होंगे। बच्चे अब समझते हैं सदगुरु तो एक ही है। बाकि सब गुरु डुबोते ही आये हैं। खेवईया एक ही बाप है। मनुष्य खेवईया, बागवान नहीं बन सकते। नर्क से स्वर्ग में ले जाने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। याद की यात्रा से नईया पार हो जाती है। यह बाप भी वन्डरफुल है, ज्ञान भी वन्डरफुल है। किसको कहा शिव हमारा बच्चा भी है तो कहेंगे यह क्या है। समझ न सके। तुम कहते आये हो कि बाबा आप जब आवेंगे तो हम वारी जावेंगे। बाप बच्चों पर वारी जाते हैं। यह फिर बच्चे बाप पर वारी जाते हैं। बच्चे बाप को अपना तन, मन धन देते हैं तो फिर बाप 21 जन्म लिए स्वर्ग में सब कुछ देंगे। यहां तो यह कब्रस्थान है। यह सब कुछ खतम हो जाने वाला है। तुम बाप से 21 जन्म लिए वर्सा लेते हो पदमपति बनने। बाप दाता है बेहद का सुख देनेवाला। पारलौकिक बाप कहते हैं मैं कल्प2 आये भारत को स्वर्ग बनाता हूं। फिर रावण आकर नर्क का मालिक बनाते हैं। बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इतनी सहज बात को भी मनुष्य मा... राजेराजवारे नहीं जानते। बाप आकर आधा कल्प लिए चढ़ती कला करते हैं। सीढ़ी है ना। बाप चढ़ती करते हैं तो माया फिर उतरती कला कर देती है। सीढ़ी पर कोई समझाये सकते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति बाप का यादप्यार और गुडमार्निंग और नमस्ते भी। ओम शान्ति?